

|              |   |
|--------------|---|
| आम आरख       |   |
| 1823         | I |
| AMA ARCHIVES |   |

परीक्षा

७











र्बलाकायः॥ किन्नरलाकायः॥ दिग्पाललाकायः॥ द्रवकलाकायः॥ स्वर्गलाकायः॥ आश्वमेधीश्वरायः॥ हृदयादि॥  
 आवाहनादि॥ सर्वदक्षकायः॥ ॥ धूपं ॥ वनस्पतित्रयस्य त्रैगुण्यं समनाहृतः॥ आवाहं सर्वदेवानां धूपं यन्निष्ठुं  
 ॥ ॥ दीपं ॥ मूषकाक्षमहादीयः सर्वतन्निमित्ताय हृतः॥ महाज्ञात्यकृतधूपं दीपार्थं यन्निष्ठुं ॥ ॥ ॥ ॥  
 यविविधाकारं कदलीयनमादिकं॥ वृक्षपुष्पादिसमेतं गृहालयन्मन्त्रेण ॥ नैवेद्यं ॥ नैवेद्यं गिरिजामाद  
 हिमत्रयं गिरि॥ घृतगर्कशयायुक्तं पदं मिदमीश्वरि॥ ॥ तावत् ॥ पूगं ॥ पूगं गन्धर्वैर्घृतं घृतं नैवेद्यं

गनं॥ अथ मन्त्रादर्थं युक्तं ताम्बूलं यन्निष्ठुं ॥ वृक्षं रुतति॥ ॥ अथार्घ्यविधिः॥ ॐ अद्यति॥ यजमानस्य ग्रीवस्थ  
 नीयन्मन्त्रं त्रीयुजा निमित्तं यथं वृक्षमर्घ्यं गृहाय स्वाहा॥ ॥ गृह्णीत यममादाय मयूष्यं रुतं पुनर्दत्तं॥ जानूयार्धनरी  
 धूय गृहायार्घ्यं तमाप्नुत॥ अर्घ्यं देवदेवानि वृक्षं त्राय निवद्विडं॥ मन्त्रानवद्विडं कामा नैवेद्यं यन्निष्ठुं ॥  
 त्रीयुजा॥ पतिष्ठा॥ ॐ मनाहृति॥ ॥ मधुला॥ अथ॥ स्नातं॥ ॥ ॐ नमः॥ ग्रीवस्थायै॥ ॐ नमः॥ निवायनाका  
 कलगादिस्नानं॥ वृक्षं रुतति॥ अथ गन्धादि॥ ॥ मधुलविमर्जनं॥ देवदक्षिणा॥ वामनपूजा॥ वार्ष्णिनाया॥ वामनादि



सं०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कलम विमर्जना कलमर्जय ॥ दयलूष ॥ अर्घ्यपात्रया लीषन ॥ अलिषका ॥ वतसिन्दूरमाहनि  
सगुणानीर्वादा ॥ सकलया त्रिप्रधिकाया ॥ ॥ आसना ॥ सूर्यामाकि ॥ स्वस्वानी वतपूजा मयिपुत्रुर्थेन कर्मलं ॥ मा  
ॐ ॥ किरण ॥ दयविमर्जना ॥ गङ्गागङ्गाय नमः ॥ स्वस्वानी जगदीश्वरि ॥ वर्षवर्ष अरुंधाया पुनरागमनात् ॥ मधुन  
ममर्जनादी ॥ पात्रदी ॥ नलीकागर्जनी ॥ ॥ नमिस्वस्वानी वतपूजा विधिमा ॥ म २७ द ॥ आवलवादिहो ॥ ॥ ॥  
दीस्वस्वानी देवीनमः ॥ ॥

ASHA ARCHIVES

1823

I